

डॉ. भीमराव अम्बेडकर शासकीय महाविद्यालय पामगढ़

जिला- जांजगीर- चाँपा (छ.ग.)



धरोहर

महाविद्यालयीन ई-पत्रिका 2021

डॉ. भीमराव अम्बेडकर शासकीय महाविद्यालय पामगढ़

जिला- जांजगीर- चाँपा (छ.ग.)

धरोहर

महाविद्यालयीन ई-पत्रिका 2021

दूसरा संस्करण

महाविद्यालय परिवार



प्रथम पंक्ति (बाएं से दायें) डॉ. डी. एस. ठाकर(हिंदी), प्रो. बी.पी. पाटले (प्राचार्य), प्रो. जे. पी. साहू (विभागाध्यक्ष वाणिज्य), डॉ. एस. आर. महेंद्र (विभागाध्यक्ष राजनीतिशास्त्र)

द्वितीय पंक्ति (बाएं से दायें)

प्रो. मीरा टंडन (वाणिज्य), प्रो. अल्का शुक्ल (अंग्रेज़ी), डॉ. एस. के. अग्रवाल (प्राणिशास्त्र), डॉ. आशीष तिवारी (रसायनशास्त्र), श्री कमलेश साहू (लैब. तकनीशियन), श्री आर. एस. अली (लैब. तकनीशियन), श्री दिनेश ध्रुव (भृत्य), श्री रवि कुमार मरावी (भृत्य), श्री शरद श्रीवास (पंडित सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय), श्री समारू राम खूंटे (चौकीदार) श्री विपिन चंदेल (पंडित सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय)|

प्राचार्य कि कलम से



आज समूचा विश्व एक ऐसी महामारी का सामना कर रहा है, जिसने हम सबको घर पर रहने को विवश कर दिया है। घर पर रहकर भी हम विविध माध्यमों से अपने विद्यार्थियों से जुड़े रहे, शिक्षा और सामयिक विमर्शों में सक्रिय रहे और आपदा के काल में सभी ने आत्मविश्वास और अनुशासन के महत्त्व को और भी बेहतर तरीके से समझा है। भौतिक रूप से सबसे दूर होकर विभिन्न माध्यमों से शिक्षक, छात्रों के संपर्क में रहे हैं। यह सब ई-स्रोत के कारण ही संभव हो पाया। शिक्षक और हमारे गैर शिक्षक कर्मचारी वर्ग ने यह यथासंभव प्रयास किया कि छात्रों का समय व्यर्थ न जाए। अस्तु हमने ये संकल्प किया कि छात्र-छात्राओं कि विचारों को माध्यम प्रदान करें। रचनाएँ सार्वभौमिक और सार्वकालिक होती हैं। 'धरोहर' के इस अंक के संपादन और रूपाकार के लिए मैं IQAC और समग्र 'धरोहर टीम' को बधाई देता हूँ। प्राचार्य के रूप में 'धरोहर' ई-पत्रिका का यह अंक आपके हाथ में सौंपते हुए मुझे जिस हर्ष का अनुभव हो रहा है उसे शब्दों में व्यक्त करना संभव नहीं है। आप सभी को मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं!

प्राचार्य

Patron - Mr. B.P. Patley

Chief Editor: Dr. Ashish Tiwari

(IQAC COORDINATOR)

Editors - Dr. D.S. Thakur (Hindi)

Mr. J. P. Sahu (Commerce)

Dr. S.R. Mahendra (Political Science)

Mrs. Alka Shukla (English)

Ms. Mira Tandon (Commerce)

सम्पादकीय



कॉलेज पत्रिका "धरोहर-21" का हिस्सा होना मेरे लिए बहुत गर्व और सौभाग्य की बात है। यह प्रत्येक छात्र को अपने सीखने के कौशल को विकसित करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। कॉलेज का मुख्य जोर अतिरिक्त पाठ्यचर्या और सह पाठ्यक्रम गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को आकार देने के लिए मानवीय उत्कृष्टता प्राप्त करना है और उनमें नैतिक मूल्यों को स्थापित करना है जो हमारी नवोदित प्रतिभाओं ने अपने विचारों को व्यक्त किया है। विचारों, आशाओं, भावनाओं की आकांक्षाओं और विश्वासों को एक में रचनात्मक तरीका वास्तव में यह है कि कैसे उनके मानसिक, मनोवैज्ञानिक और बौद्धिक क्षितिज को विस्तृत करता है। कॉलेज पत्रिका यह दर्शाती है कि कैसे कॉलेज अपने छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहा है जैसा कि आप पृष्ठों के माध्यम से देख सकते हैं। यह आपको प्रबुद्ध करेगा इस वर्ष हमारे कॉलेज ने जो महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं मैं इस रचनात्मक कार्य के लिए मुझ पर विश्वास करने के लिए हमारे प्रिंसिपल को तहे दिल से धन्यवाद देता हूँ। संपादकीय बोर्ड के हमारे सम्मानित सदस्यों और छात्र सदस्यों को भी उनके सहयोग और समर्थन के लिए धन्यवाद देता हूँ।

डॉ. आशीष तिवारी

IQAC Coordinator

व्यक्तित्व विकास आधारित शिक्षा



जे.पी. साहू

सहायक प्रध्यापक वाणिज्य

स्वतंत्रता संग्राम के दिनों से लेकर आज तक जब भारत को आजादी अर्जित किए कई दशक गुजर चुके हैं इस अवधि में भारतीय शिक्षा व्यवस्था चुनौतियों के एक महत्वपूर्ण दौर से गुजर चुकी है। इस दौरान अनेक नई नई समस्याओं का सामना भी भारतीय शिक्षा प्रणाली को करना पड़ा जिसमें अनेक समस्याओं का सफल समाधान भी समय रहते संभव हो सका परंतु आज भी न जाने ऐसे कितने आयाम हैं जिन पर भारत के शैक्षणिक भविष्य को देखते हुए एक गंभीर चिंतन मनन किए जाने की आवश्यकता है।

परतंत्रता के दिनों में भारत की शिक्षा प्रणाली उतनी विकसित नहीं थी, उस शिक्षा प्रणाली का संबंध ना तो भारतीय सांस्कृतिक विरासत से था और ना ही उसके उद्देश्य भारतीय जनहित में थे। आजादी मिलने के साथ-साथ बहुत ही सामाजिक समस्याएं भी भारत को विरासत में मिली, जिन का स्पष्ट प्रमाण शिक्षा व्यवस्था पर देखा जा सकता था। अर्थव्यवस्था चरमरा रही थी, एक बड़ा तबका पूर्णतया निरक्षर था और गरीब व सामाजिक कुरीतियों सर्वत्र व्याप्त थी इन सभी चुनौतियों का सामना करते करते भारत के सामने उद्देश्य यह था कि सभी को शिक्षित कर सकने वाली शैक्षणिक व्यवस्था बनाई जा सके उस समय भारत के शिक्षाविदों के सम्मुख यह लक्ष्य था, एक शिक्षा व्यवस्था की स्थापना करें कि वह जन सामान्य को शिक्षित बनाने के साथ-साथ संस्कारी भी बना सके। यह एक महत्वपूर्ण आवश्यकता थी कि शिक्षा अलौकिक विकास के साथ-साथ सांस्कृतिक धरोहर को भी अक्षुण्ण बनाए रख सकें। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग माध्यमिक शिक्षा आयोग कोठारी आयोग एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति जैसे प्रयासों के माध्यम से एक ऐसी प्रगतिशील शिक्षा व्यवस्था की स्थापना की गई

जिससे एक मजबूत व संस्कारी देश की नींव तैयार हो सके। दुर्भाग्य मात्र इतना ही रहा कि इन सारे प्रयासों का उद्देश्य मात्र अलौकिक विकास तक ही सीमित रह गया एवं उनके माध्यम से छात्र-छात्राओं एवं भविष्य के नागरिकों में राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण के प्रयास पर कोई बल नहीं दिया गया। शिक्षा आयोग का संपूर्ण जोर विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा के विकास पर ही था तो वही माध्यमिक शिक्षा आयोग लोकतांत्रिक परिवेश में शिक्षा की भूमिका के महत्व पर ज्यादा जोर देता दिखा।

यह सत्य है कि इन प्रयासों के माध्यम से कुछ अच्छी सोच भी उभरकर आई जैसे कोठारी आयोग ने बच्चों के विकास में समाज उपयोगी उत्पादक कार्यों को शामिल करने की अनुशंसा की तो वही राष्ट्र शिक्षा नीति में सभी के लिए शिक्षा तथा ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड जैसे सार्थक प्रयास किए।

भारत एक विशाल राष्ट्र है एवं इसका सामाजिक परिवेश भी बहुत सी विविधताओं एवं अनेक भाषाओं को अपने में समेटे हुए है और इसलिए बहुत सी योजनाओं के प्रभाव को व्यापक रूप से महसूस करने में वर्षों लग जाते हैं इन सबके बावजूद बहुत से परिवर्तन ऐसे हैं जिन्हें श्रेष्ठ व अनुपम कहा जा सकता है। भारत की साक्षरता का स्तर पहले की तुलना में कई गुना बेहतर है, रोजगार की संभावनाएं बढ़ रही हैं और धीरे-धीरे ही सही पर भारत के अनेक शैक्षणिक संस्थान विश्व के पटल पर अपनी पहचान बनाते दिख रहे हैं।

इन सारे परिवर्तनों के मध्य यह हमारे लिए जरूरी है कि हम अपने विद्यार्थियों को साक्षरता के अतिरिक्त सार्थकता का पाठ पढ़ाएं। उन्हें शिक्षा के अलावा विद्या का गान सुनाएं, उन्हें अच्छे डॉक्टर इंजीनियर बनाने के साथ-साथ अच्छा इंसान भी बनाएं।

आजाद भारत में शैक्षणिक दृष्टि से हमारी उपलब्धियां प्रशिक्षण के योग्य कही जा सकती हैं भारत के चिकित्सक, इंजीनियर, वैज्ञानिक अपनी योग्यता विश्व के प्रतिष्ठित संस्थानों में सिद्ध करवा चुके हैं।

तब भी भारत की शैक्षणिक दृष्टि से सभी मात्र रोजगार परक नहीं रही बल्कि व्यक्तित्व निर्माण की रही है अनुशासन, सत्यवादीता, श्रमशीलता, विनम्रता हमारे यहां पाठ्यक्रम का अंग भले ही ना रहा हो परंतु विद्यार्जन का अभिन्न अंग रहे हैं। आज उसी चिंतन को पुनः भारतीय शिक्षा का आधार बनाने की जरूरत है ताकि देश को श्रेष्ठ एवं समुन्नत नागरिक सदा मिल सके।

दैनिक जीवन में नैनोटेक्नोलॉजी

डॉ. आशीष तिवारी

सहायक प्राध्यापक (रसायनशास्त्र)

नैनोमटेरियल्स के गुण न केवल उनकी संरचना पर बल्कि उनके आकार पर भी निर्भर करते हैं। कुछ सौ परमाणुओं के समूह में एक ही सामान के “मैक्रोस्कोपिक लम्प” से काफी भिन्न गुण हो सकते हैं, मुख्यतः क्योंकि इस पैमाने पर मटेरियल क्वांटम दुनिया के नियमों से खेलना शुरू कर देती है।

अपने सबसे क्रांतिकारी रूप में नैनोटेक्नोलॉजी रसायन विज्ञान को भौतिकी, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग या जीव विज्ञान के साथ इस तरह से जोड़ती है जो कुछ अद्भुत अवसर प्रस्तुत करते हैं - लेकिन कुछ संभावित जोखिम भी। कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम “बल्क मटेरियल” के जैव रसायन या पर्यावरणीय विशिष्टता को कितनी अच्छी तरह समझते हैं बस इसके पैमाने को बदलने से हमारा ज्ञान अधूरा हो जाता है। दैनिक जीवन में नैनोटेक्नोलॉजी में कुछ प्रयोग

1. सनस्क्रीन

सनस्क्रीन को अधिक प्रभावी बनाने के लिए नैनोकणों को हाल ही में उपयोग में लाया जा रहा है। आमतौर पर सनस्क्रीन में प्रयोग होने वाले दो विशेष प्रकार के नैनोपार्टिकल्स, टाइटेनियम डाइऑक्साइड और जिंक ऑक्साइड हैं। ये छोटे कण न केवल यूवी विकिरण को अवरुद्ध करने में अत्यधिक प्रभावी होते हैं वे त्वचा पर हल्की परत की तरह महसूस होते हैं।

2. वस्त्र

जब वस्त्रों में उपयोग किया जाता है, तो सिलिका के नैनोकण ऐसे कपड़े बनाने में मदद कर सकते हैं जो पानी और अन्य तरल पदार्थों को प्रतिकर्षित करते हैं। सिलिका को या तो कपड़े की बुनाई में शामिल करके या कपड़े की सतह पर स्प्रे करके वाटरप्रूफ या स्टेनप्रूफ कोटिंग बनाने के लिए कपड़े में जोड़ा जा सकता है।

3. फर्नीचर

जिस तरह नैनो तकनीक से कपड़ों को वाटरप्रूफ और स्टेनप्रूफ बनाया जा सकता है, उसी तरह असबाबवाला फर्नीचर भी बनाया जा सकता है। नैनो तकनीक फर्नीचर को कम ज्वलनशील बनाने में भी मदद कर रही है; कार्बन नैनोफाइबर के साथ असबाबवाला फर्नीचर में इस्तेमाल होने वाले फोम को कोटिंग करके, निर्माता ज्वलनशीलता को 35 प्रतिशत तक कम कर सकते हैं।

4. कंप्यूटर

नैनोटेक्नोलॉजी के बिना, हमारे पास रोजमर्रा की जिंदगी में उपयोग किए जाने वाले कई इलेक्ट्रॉनिक्स नहीं होंगे। इंटेल निस्संदेह छोटे कंप्यूटर प्रोसेसर में अग्रणी है, और इंटेल की कोर प्रोसेसर प्रौद्योगिकी की नवीनतम पीढ़ी 10-नैनोमीटर चिप है। जब आपको लगता है कि एक नैनोमीटर मीटर का एक अरबवां हिस्सा है, तो यह अविश्वसनीय रूप से प्रभावशाली है!

स्वस्थ जीवन का रहस्य

अच्छा स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है. कभी हमने सोचा है कि हमारे बड़े बुजुर्ग, हमारे पूर्वजों की जीवन शैली कैसे हुआ करती थी .उनका स्वास्थ्य बड़ा ही अच्छा रहता था. उनकी जीवनशैली ही ऐसी हुआ करती थी कि जिससे हमें स्वस्थ जीवन के रहस्य का पता चल जाएगा.

सुबह जल्दी उठते ही खाली पेट तांबे के बर्तन का पानी पीते थे, जिसे आयुर्वेद में उषापान कहा जाता है. इससे पेट के रोग दूर होते हैं. दांतों को मजबूत करने के लिए नीम के दातुन से दांत साफ किया जाता था .उनका रोज चार-पांच किलोमीटर लंबा चलना हुआ करता था . योग प्राणायाम व सूर्य नमस्कार किया करते थे, जिससे शारीरिक व्यायाम भी हो जाता था और शरीर को विटामिन डी की जरूरत भी पूरी हो जाती थी. उस समय फल सब्जियां उगाने के लिए प्राकृतिक खाद गोबर का उपयोग किया जाता था, रसायनिक खाद का उपयोग नहीं किया जाता था .घर-घर गौ माता की सेवा की जाती थी जिससे शुद्ध दूध, दही ,घी की प्राप्ति हुआ करती थी . हमारे पूर्वज सात्विक भोजन का सेवन किया करते थे.

मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए सद विचार, ध्यान और मानवता पर अधिक जोर दिया जाता था. उनका मानना था जरूरतमंदों की मदद करने से आत्मिक शांति मिलती है . वे पेड़-पौधों के महत्व को जानते थे इसीलिए उस समय अधिक से अधिक पेड़ - पौधे लगाए जाते थे और उनकी पूजा की जाती थी.

बड़ों को यह पता था कि बदलते मौसम के साथ शरीर में संक्रमण व बीमारी का खतरा रहता है जिसके लिए उन्होंने व्रत-त्योहार बनाएं .आयुर्वेद में उपवास को शारीरिक व मानसिक शुद्धता की प्रक्रिया के रूप में माना गया है.

बदलती जीवन शैली के कारण आज हम भौतिक सुख सुविधाओं के इतने आदी हो गए हैं की शरीर की रोगों से लड़ने की शक्ति क्षीण होती जा रही है

हमारे पूर्वजों ने प्रकृति के नियमों का पालन किया है . संतुलित भोजन ,संयमित जीवनशैली, प्रकृति से जुड़ाव ,यही स्वस्थ जीवन का रहस्य है .हम भी इस सूत्र को अपना कर अपने जीवन को स्वस्थ बना सकते हैं

प्रो. मीरा टंडन

सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)



डॉ. एस. आर. महेंद्र
विभागाध्यक्ष (राजनीतिशास्त्र)

छत्तीसगढ़ी स्वरचित गीत

टुरा चना बुटरू तोर दाई रांधे कुंदरू
तभो ले मोटावस नहीं उसनेच तैं तुतरू

टुरा चना बुटरू तोर दाई रांधे कुंदरू

खाना खाए पर बैठे टूरा पोरसे ओखर दाई
ओ ही समय में आगे ठौंका ओकर ममा दाई....2
मोरो बांटा राखे रिहा सुनले टूरा हूंकरू

टुरा चना बुटरू तोर दाई रांधे कुंदरू

दोनों समधीन मिलजुल के राम जोहारी होईन
कुंदरू साग नईये कहके दोनों डोकरी रोईन.....2
बने भात खाईहा कर के बैठे टूरा ऊखरू

टुरा चना बुटरू तोर दाई रांधे कुंदरू

जीव विज्ञान (Biology) विषय से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

वर्गीकरण की सबसे छोटी इकाई जाति (species) है।
कवक की कोशिका भित्ति काइटिन की बनी होती है।
कैरोलस लीनियस को वर्गिकी का पिता कहा जाता है।
जीवाणु तथा नीलरहित शैवाल मोनेरा जगत के संबंधित है।
प्रोटिस्टा जगत के अंतर्गत एककोशकीय जीव आते हैं।
ऐनिमेलिया जगत के अंतर्गत बहुकोशकीय तथा यूकैरियोटिक जंतु आते हैं।
लीनियस ने जीवों के नामकरण की द्विनाम पद्धति विकसित की थी।
अरस्तु को जीव विज्ञान का पिता (father of Biology) कहते हैं ।
ब्रायोफाइटा को "पादप वर्ग का उभयचर" कहते हैं ।
पौधों में अर्द्धसूत्री विभाजन के लिये परागकोश सबसे उपयुक्त भाग होता है।
जीवाणुभोजी ,जीवाणु को संक्रमित करने वाला विषाणु हैं।
आलू एक कंद है।
स्टार्च एक पॉलीसैकेराइड है।
हरित पादप प्रथम पोषक स्तर के अंतर्गत आते हैं।
"अल्फाल्फा" एक प्रकार की घास है।
एम्बिलिका ओफिसिनोलिस ,अफीम का वास्तविक नाम है।
जिम्नोस्पर्म वर्ग के पौधे नग्नबीजी होते हैं ,अर्थात् इनके बीज फलों के अंदर नई होते ।
थैलोफाइटा वर्ग के पौधे मुख्यतः जलीय पादप होते हैं।
टेरिडोफाइटा वर्ग के पौधे का शरीर जड़,तना तथा पत्ती में विभाजित होता है।
आर्थोपोडा संघ जंतु जगत का सबसे बड़ा संघ है।
पोरीफेरा संघ के जीवों को सामान्यतः स्पंज के नाम से जाना जाता है।
सीलेंटरेटा संघ के जंतु जलीय होते हैं जिनका शरीर दो कोशिकाओं की दो परतों का बना होता है।
मोल्सका वर्ग के जीवधारी द्वीपार्श्वसम्मिंत होते हैं।
इकाइनोडर्मेटा जंतुओं में विशिष्ट जल संवहन नालतंत्र पाया जाता है ।
बट्रीब्रेटा (कशेरुकी) सर्वाधिक विकसित जंतुओं का वर्ग है।
द्विनाम पद्धति का जन्मदाता कैरोलस लीनियस है।
साइनोबैक्टीरिया को प्रथम प्रकाश - संश्लेषी जीव मन जाता है ।

वाइरस न्यूक्लियो प्रोटीन से बने होते हैं।

डब्ल्यू० एम्० स्टेनले को वाइरस के क्रिस्टल के रूप में सबसे पहले पृथक करने का श्रेय प्राप्त है।

जंतु जिनमें परस्पर जनन होता है , जाती स्तर पर सब समान होता है।

चपटे कृमि , सिलेट्रेटा, पोरिफेरा एवं प्रोटोजोआ वर्ग के जंतुओं में देहगुहा नहीं पाई जाती है ।

वास्तविक देहगुहा का निर्माण भ्रूणीय परिवर्धन के मिसोडर्म अवस्था से होता है ।

काइटिन युक्त बाह्य कंकाल कीटों में पाया जाता है ।

“सिस्टेमा नेचूरी” नमक पुस्तक के लेखक “कैरोलस लीनियस” है ।

हाइड्रा में बिना मस्तिष्क का तंत्रिका तंत्र होता है । क्षारीय मृदा में हेलोफाइट्स वर्ग के पौधे अच्छी वृद्धि करते हैं।

सर्वप्रथम जे० सी० बोस ने बताया की पेड़ पौधों में जीवन है।

चमगादड़ उड़ने वाला स्तनपायी है।

व्हेल सबसे बड़ा स्तनपायी है।

दलहन में नाइट्रोजन स्थिरीकरण की क्षमता होता है ।

उत्सर्जी तंत्र का गुण पादपों में नहीं पाया जाता है ।

थैलोफाइट को "पादप वर्ग का उभयचर" भी कहा जाता है।

हाइड्रा में रुधिर नहीं होता, फिर भी वह श्वसन करता है।

आर्थोपोडा में काइटिन युक्त उपचर्म का बना बाह्य कंकाल पाया जाता है ।

झींगा मछली, क्रेफिश तथा सिल्वर फिश आर्थोपोडा संघ के जीव हैं।

ऑक्टोपस मोलस्का संघ के जंतु हैं।

मोलस्का संघ के कुछ जंतुओं में नीले या हरे रंग का रुधिर हिमोसायनिन के कारण होता है ।

उत्क्रम अनुलेखन की क्रिया DNA से DNA का निर्माण है।

DNA द्विगुणन का सही विधि विधि अधिपरिमित है।

प्रोकैरियोट्स तथा यूकैरियोट्स का मुख्य अंतर केंद्रक कला की अनुपस्थिति है।

वाटसन तथा क्रिक ने B-DNA मोडल दिया है।

राइबोसोम प्रोटीन तथा टी.आर.एन.ए. के बने होते हैं।

राइबोसोम कलाविहीन कोशिकांग है।

प्रोटीन संश्लेषण में अंतः द्रव्यी जालिका और राइबोसोम कोशिकांगों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

डी.एन.ए. पॉलिमरेज़ एंजाइम न्यूक्लियोटाइड्स से DNA संश्लेषण में काम आता है।

केंद्रक (Nucleus) के अतिरिक्त माइटोकाण्ड्रिया (Chloroplast) तथा हरित लवक में DNA पाया जाता है।

प्रोकैरियोटिक कोशिकाओं में श्वसन (Respiration) का कार्य मीसोसोम (Mesosome)

करते हैं जबकि यूकैरियोटिक कोशिका में श्वसन का कार्य माइटोकॉण्ड्रिया करते हैं ।
कोशिका भित्ति (Cell wall) पौधों में उपस्थित होती है जबकि जंतुओं में अनुपस्थित होती है।
कोशिका झिल्ली (Cell membrane) एक अर्द्धपारगंब झिल्ली(semi permeable membrane)
होती है । यह कुछ विशिष्ट अणुओं को ही अपने आर -पार जाने या आने देती है।
प्रोटीन का निर्माण या प्रोटीन का संश्लेषण (protein synthesis)राइबोसोम की सहायता से होता
है।

माइटोकॉण्ड्रिया को कोशिका का पावर हाउस (powerhouse of the cell) भी कहा
जाता है क्योंकि इसमें श्वसन क्रिया के दौरान भोजन के विखंडन से ऊर्जा उत्पन्न होती है जो
ATP(Adenosine triphosphate) के रूप में संचित रहती है।

गॉल्जीकाय (Golgi body) का मुख्य कार्य कोशिका (cell) द्वारा संश्लेषित प्रोटीन,वसा आदि की
पैकेजिंग करना है।

गॉल्जीकाय को कोशिका के अणुओं के traffic controller भी कहा जाता है।

लाइसोसोम (lysosome) को आत्महत्या की थैली कहा जाता है।

हरित लवक (Chloroplast) को कोशिका का रसोईघर(Kitchen of the cell) भी कहा जाता है
क्योंकि इसमें प्रकाश संश्लेषण की क्रिया द्वारा भोजन का निर्माण होता है।

रेखित पेशी में मायोसिन एवं ऐक्टिन प्रमुख प्रोटीन होते हैं।

माइटोकॉण्ड्रिया की उपस्थिति में शरीर में कुछ ऊतक, जैसे कि पेशियाँ, अन्य ऊतकों से अधिक
सक्रिय होते हैं।

रुधिर भी एक प्रकार का ऊतक है।

ऊतक शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम विशैट(Bichat) ने किया था।

रुधिर एवं कोशिकाओं के बीच रासायनिक आदान-प्रदान ऊतक द्रव के माध्यम से होता है।

ठोस अन्तरांगों जैसे- जिह्वा, किडनी, यकृत, तिल्ली आदि पर इपीथिलियम ऊतक का रक्षात्मक
आवरण होता है।

त्वचा पर चोट लगने के बाद इसका पुनरुद्भवन धनाकार उपकला के द्वारा होता है।

एंडोथिलियम शल्की कोशिकाओं की बनी होती है।

मास्ट कोशिकाएँ संयोजी ऊतक में मिलती हैं।

स्नायु एवं कंडराएँ संयोजी ऊतक हैं।

कंकाल मीसोडर्मी होता है।

त्वचा को "Jack of All Trades" भी कहते हैं।

काली त्वचा पर सूर्य कि पराबैंगनी किरणों का कम प्रभाव पड़ता है।

मस्तिष्क, मेरुरज्जु और तंत्रिकाएँ सभी तंत्रिका ऊतकों कि बनी होती हैं।

हृदय पेशियाँ केवल हृदय भित्ति (Heart wall) में पाई जाती हैं ।

हृदय पेशी में अत्यधिक मात्रा में माईटोकॉण्ड्रिया पाया जाता है।

हृदय की पेशियों के संकुचन का नियंत्रण, तंत्रिका का तंत्र के नियंत्रण में न होकर स्वयं पेशियों के नियंत्रण में होता है।

पेशियों में लैक्टिक अम्ल की अधिक मात्रा में जमा होने से थकावट का अनुभव होता है ।

पेशियाँ मानव शरीर का औसतन 40% से 50% भाग बनाती है।

पेशी तंतु के आवरण को सार्कोलेमा एवं इसमें पाए जाने वाले द्रव को सार्कोप्लाज्मा कहा जाता है।

कंडरा पेशी को हड्डी से जोड़ती है।

औतिकी(Histology) ऊतकों के अध्ययन को कहते हैं ।

अंतर्वर्तीय उपकला ऊतक मूत्राशय तथा मूत्रवाहिनियों के भीतरी दीवार का निर्माण करते हैं।

जीवाणु (Bacteria) तथा नील हरित शैवालों (Blue green algae) की कोशिकाएं प्रोकैरियोटिक कोशिकाएं होती हैं।

अर्धसूत्री विभाजन के प्रोफेज 1 की पैकीटीन (pachytene) अवस्था में क्रॉसिंग ओवर (Crossing over) की प्रक्रिया होती है । इस प्रक्रिया में माता तथा पिता दोनों की ओर से आए समजात गुणसूत्र (Homologous chromosome) के क्रोमैटिड एक-दूसरे को, एक या ज्यादा स्थान पर क्रॉस करते हैं इसके दौरान क्रॉस के स्थानों पर एक क्रोमैटिड का टुटा भाग, दूसरे क्रोमैटिड के टूटे स्थान से जुड़ जाता है । यही प्रक्रिया क्रॉसिंग ओवर (Crossing over) कहलाती है । इसके द्वारा जीनों में पुनरसंयोजन होता है और संतान में नए गुण उत्पन्न होते हैं।

समसूत्री विभाजन में संतति कोशिका में गुणसूत्रों की संख्या पैतृक कोशिका के समान रहती है।

अर्धसूत्री विभाजन (Meiosis) में संतति कोशिकाओं में गुणसूत्रों की संख्या पैतृक कोशिका से आधी रह जाती है।

अनियंत्रित समसूत्री विभाजन (Uncontrolled mitosis) से कैंसर हो जाता है।

समसूत्री विभाजन वृद्धि, मरम्मत आदि के लिये आवश्यक होता है ।

RNA में थायमीन (T) के स्थान पर यूरेसिल (U) नामक पिरिमिडीन क्षार पाया जाता है।

बुढ़ापे के लिये Ageing gene जिम्मेदार होता है।

कुछ जीवाणुओं जैसे राइजोबियम के अंदर Nif gene होता है जिसकी सहायता से ये जीवाणु नाइट्रोजन का स्थिरीकरण (Nitrogen fixation) करने में सक्षम होते हैं ।

लम्बी हड्डियों के सिरे पर लचीली संधायी गदियां उपास्थि की बनी होती हैं।

रेखित एवं ऐच्छिक पेशियाँ पादों में पाई जाती हैं । तंत्रिका कोशिकाएँ एक्टोडर्म की भ्रूणीय स्तर से बनती हैं।

मास्ट कोशिकाएँ सीरोटोनिन, हिपैटिन तथा हिस्टेमीन का स्रावण करती हैं।

तंत्रिका ऊतक, उतेजनशीलता का कार्य करती है।
 स्तनियों में कुरफर कोशिकाएँ यकृत में पाई जाती हैं ।
 शरीर में उतको का निर्माण प्रोटीन से होता है।
 तंत्रिका तंतु संयोजी ऊतक के घटक नहीं होते हैं।
 शरीर की विभिन्न क्रियाओं का नियंत्रण तथा नियमन तंत्रिका तंत्र (Nervous system) द्वारा द्रुत गति से होता है।
 मनुष्य की आँख में किसी वस्तु का प्रतिबिम्ब दृष्टिपटल (रेटिना) में बनता है ।
 मनुष्य के आहार नाल में दो अवशोषी अंग सीकम एवं वर्मीफार्म एपेंडिक्स हैं।
 कार्बन मोनो-ऑक्ससाइड विषाक्तता रक्त की ऑक्सीजन के वहां क्षमता को प्रभावित करती है।
 मुखगुहा का एंजाइम टायलिन (एमाइलेज) स्ट्रेच को माल्टोज में बदलता है।
 डायलिसिस, किडनी से संबंधित है । अग्न्याशय अंतः तथा बहिःस्रावी ग्रंथि है।
 वसा का पाचन आमाशय से प्रारंभ होता है।
 कार्बोहाइड्रेट्स का पाचन मुखगुहा से प्रारंभ हो जाता है।
 अमाशय में कार्बोहाइड्रेट्स का पाचन नहीं होता है।
 नेत्रदान में कार्निन प्रयुक्त होता है।
 गृहणी तथा छोटी आंत में क्षारीय माध्यम में कार्बोहाइड्रेट्स का पाचन होता है ।
 प्रोटीन का पाचन आमाशय से होता है।
 पेप्सिन एक एंजाइम है।
 हिपेटिन नमक प्रोटीन का निर्माण यकृत में होता है ।
 विटामिन A तथा D यकृत में संचित रहता है।
 रक्त का थक्का जमने कल लिये आवश्यक विटामिन नेफथोक्विनोन (विटामिन K) है ।
 आमाशय में आक्सिटिक कोशिकाओं से हाईड्रोक्लोरिक अम्ल का स्राव होता है ।
 पाचन तंत्र के पित रस में कोलेस्ट्रॉल पाया जाता है।
 आमाशय की दीवारों का पेशीय संकुचन पेरिस्टालिसिस कहलाता है।
 भूख तथा तृप्ति हाइपोथैल्मस के द्वारा नियंत्रित होता है।
 स्वस्थ मनुष्य में लगभग 5 से 2.0 लीटर आंतरिक रस का स्राव होता है।
 अग्न्याशय द्वारा ट्रिप्सिनोजन एंजाइन का स्रावण होता है।
 इंसुलिन के अधिक स्रावण होने से हाइपोग्लाइसिमिया नमक रोग हो जाता है ।
 जठर रस (आमाशय) पाइलोरिक ग्रंथियों से स्रावित होता है।
 वसीय अम्ल तथा ग्लिसरॉल का अवशोषण लसीका कोशिका द्वारा होता है।
 एंड्रोगैस्ट्रोन आमाशयी स्रावण का अवरोधन करने वाला पदार्थ है ।

लार का स्राव तंत्रिकीय नियंत्रण में होता है ।
जठरीय एवं अग्न्याशय स्राव रासायनिक एवं तंत्रिकीय उददीपन के द्वारा होता है ।
हृदय गति को नियंत्रित करने में CO₂ रासायनिक पदार्थ की भूमिका होती है ।
रुधिर को वाहिनियों में जमने से हिपैरिव रोकता है।
मानव शरीर में सबसे मजबूत पेशियाँ जबड़े की होती हैं।
अकशेरुकी जंतुओं में खुला परिसंचरण तंत्र पाया जाता है।
हृदय की धड़कन (Heart Beat) संकुचन एवं शिथिलन है ।
मस्तिष्क एकटोड़ी होता है।
R. B. C. की संख्या हीमोसाइटोमीटर यंत्र से ज्ञात की जाती है।
ल्यूटिनाइजिंग हार्मोन अण्डोत्सर्ग के लिये उत्तरदायी है ।
हृदय को रक्त पहुंचने का कार्य कोरोनरी धमनी करती है।
हृदय धड़कन के नियंत्रण में थायरॉक्सिन एवं एड्रीनेलिन हार्मोन की भूमिका होता है ।
श्वसन केंद्र मेडुला में स्थित होता है।
लसिका घाव भरने में सहायता करती है।
हृदय के विद्युत रासायनिक आवेग को इलेक्ट्रो – कार्डियोग्राम द्वारा मापा जाता है ।
रक्त दाब स्फिग्मोमेनोमीटर नामक उपकरण से मापा जाता है।
दाद रोग ट्राइकोफाइटान नामक कवक के कारण फैलता है।
मायोपिया, नेत्र का दोष है।
फीताकृमि का संक्रमण सूअर का अधपका मांस खाने से होता है।
गठिया रोग जोड़ों में यूरिक अम्ल के जमाव से होता है।
बी.सी.जी.का अविष्कार यूरिन कालमेंट ने किया था।
हाथी पाँव का कारक वऊचेरिया बैक्रोफ्टाई है।
डेंगू ज्वर एडीज इजिप्टी नामक मच्छर से फैलता है।
पोलियो का विषाणु मेरुरज्जु के पृष्ठ श्रृंगों के ऊतक को नष्ट करता है।
हेपेटाइटिस के लिये गामा ग्लोबुलीन नामक इंजेक्शन लगाया जाता है ।
डायरिया पाचन तंत्र को प्रभावित करने वाला प्रोटोजोआ जन्य रोग है।
मानव शरीर को कार्बोहाइड्रेट चावल , मक्का, चीनी तथा शकरकंद से प्राप्त होता है।
• भारत में राष्ट्रीय मलेरिया नियंत्रण योजना (NMCP) का आरंभ 1953 में हुआ ।
इटाई-इटाई रोग का कारक कैडमियम है।
MRI तकनीक में शरीर का विस्तृत प्रतिबिंब पाने के लिये चुम्बकीय क्षेत्र एवं रेडियो तरंगों का इस्तेमाल किया जाता है।
पोलियो एक विषाणु जनित रोग है ।

रिफैम्पिसिन नामक दवा , टीबी रोग में प्रयुक्त होता है ।
 किसी जीव के किसी लक्षण विशेष के परिवर्द्धन को जीन नियंत्रित करता है।
 वंशागति का भौतिक आधार क्रोमोसोम को खा जाता है।
 "Orgin of species " नामक पुस्तक के लेखक चार्ल्स डार्विन हैं।
 प्राकृतिक वरण के सिद्धांत के प्रतिपादक चार्ल्स डार्विन हैं ।
 श्लीडन तथा शेन ने कोशिका सिद्धांत के मत का प्रतिपादन किया था।
 वंशागति के क्रोमोसोम सिद्धांत का प्रतिपादन वाल्टर सटन ने किया था।
 लिंग - सहलग्नता की खोज मार्गन ने की थी।
 संरचनात्मक जीन अवधारणा में प्रचालक , वर्द्धक एवं नियामक जीन होता हैं।
 मेंडल के नियम का अपवाद सहलग्नता है।
 हीमोफीलिया , सिकल सैल अनीमिया तथा थेलेसिमिया एक उत्परिवर्ती जीन के कारण होने वाली बीमारियाँ हैं।
 क्रोमोसोम की संरचना डी० एन० ए० एवं प्रोटीन से होती है।
 "एक जीन एक एंजाइम" सिद्धांत के प्रतिपादक बीडिल एवं टैटम थे।
 NDRI करनाल (हरियाणा) के वैज्ञानिकों के भैंस का दूसरा क्लोन विकसित किया है।
 शरीर रचना के क्रस्टेशियन्स वर्गीकरण में लॉबस्टर संबद्ध होता है।
 जैव विकास में उत्परिवर्तनों का महत्व आनुवंशिक विभिन्नताएँ हैं ।
 अनुवांशिक एवं विकासीय परिवर्तनों की संभावना उन जीव - जातियों में अधिक होती है ,जिनमें द्वि- विभाजन द्वारा प्रजनन होता है।
 जीन शब्द W. L जोहैनसन बने ने दिया था।
 प्रोटीन अणुओं का अमीनों अम्ल कर्म जीन द्वारा नियंत्रित होता है।।
 सर्वप्रथम कृत्रिम जीन का प्रयोगशाला में संश्लेषण डॉ० हरगोविंद खुराना ने किया था।
 ग्रेगर मेंडल ने आनुवंशिकता पर अध्ययन 19वीं शताब्दी में किया ।
 चार्ल्स डार्विन की पुस्तक ऑन ओरिजिन ऑफ स्पीसीज 1859 ई० में प्रकाशित हुई थी।
 डार्विनवाद की सबसे बड़ी विभिन्ताओं की उत्पत्ति एवं कारणों की व्यख्या का आभाव सबसे बड़ी कमी थी।
 जीवन संघर्ष में योग्यतम की उत्तरजीविता सिद्धांत चार्ल्स डार्विन एवं आल्फ्रेड रसेल वैलेस से संबंधित है।
 क्रोमोसोम कम्प्लेक्स में पाए जाने वाले अनुवांशिक पदार्थ को जीनोम कहते हैं ।
 ऐनिलिडा तथा आर्थोपोडा संघ का संयोजक जंतु परिपेटस है।
 जैव विकास के कर्म में सरीसृप से उड़ने वाले प्रथम पक्षी आर्कियोप्टेरिक्स का विकास जुरैसिक काल में हुआ था।

मेंडल ने आनुवंशिकी संबंधी अपने प्रयोग मटर के पौधे (गार्डन पी) पर किये ।
 ग्रेगर जॉन मेंडल को "अनुवांशिकी का जनक" खा जाता है ।
 पटाऊ सिन्ड्रोम क्रोमोसोम संख्या - 13 की ट्राइसोमि (Trisomy) के कारण होता है ।
 वर्णांधता को लाल - हरा अंधापन भी खा जाता है । हिमोफिलिया को रक्त स्रवण रोग भी कहा जाता है।
 स्लीपिंग सिकनेस सी-सी मक्खी द्वारा फैलता है।
 प्लाज्मोडियम फाल्सीपेरम मलेरिया परजीवी से होता है ।
 मलेरिया परजीवी को खोज ए० लेबेरोन ने की थी।
 फाइलेरिया में मनुष्य की लसिका ग्रंथि प्रभावित होती है ।
 कुनैन नमक मलेरिया की दवा सिनकोना के पौधे से प्राप्त होती है ।
 भारत में हेपेटाइटिस - बी रोगियों की संख्या अधिकतम है।
 एस्पिरिन तथा पेन्टाजोसिन नमक औषधियों विलो (Willow) से प्राप्त की जाती है ।
 कैंसर उपचार के लिये कोबाल्ट 60 रेडियोधर्मी तत्व का बहुतायत प्रयोग किया जाता है ।
 कैंसर कोशिकाएं उत्तपन करने के लिये आन्कोजीन्स जिम्मेदार माना जाता है।
 रक्त कैंसर को ल्यूकीमिया कहा जाता है ।
 इंसुलिन का स्रावण अग्न्याशय ग्रंथि से होता है।
 अस्थि तथा त्वचा कैंसर सार्कोमा समूह के प्रकार का कैंसर है।
 पेयजल में नाइट्रेट की अधिक मात्रा होने से ब्लू बेबी सिंड्रोम नामक रोग होता है।
 कुनैन दवा सिनकोना नामक वृक्ष की छाल से प्राप्त की जाती है।
 रोबर्ट कोच ने प्रमाणित किया की पशुओं में होने वाला एंथ्रेक्स रोग सक्षमजीवी जीवाणुओं द्वारा होता है।
 हिप्पोक्रेट्स को औषधि विज्ञान का पिता कहा जाता है।
 स्वाइन फ्लू नामक रोग फैलाने वाले वायरस का नाम इन्फ्लुन्जा HN है ।
 लौहतत्व (आयरन) की कमी के कारण रक्ताल्पता (एनीमिया) होता है ।
 आयोडीन की कमी से गलघॉटू (ग्वायटर) बीमारी होती है ।
 "इम्प्यूनोलॉजी" के जनक एडवर्ड जेनर है ।
 सूरजमुखी तेल हृदय रोगियों के लिये उपयुक्त होता है।
 ज्वर में रक्त कणिकाओं में सुजम आ जाती है ।
 जापानी इंसेफेलाइटिस एक विषाणु जनित (Viral) रोग है ।
 एडवर्ड जेनर ने चेचक के टीके की खोज की।
 कैंसर कोशिकाओं के अनियंत्रित विभाजन के कारण होता है।
 हेपेटाइटिस , यकृत की बीमारी है , जो विषाणुओं द्वारा होती है।

साइंस फैक्ट्स

1. इंसान के दिमाग की इतनी स्टोरेज क्षमता है कि विकिपीडिया पर उपलब्ध जानकारी से भी 5 गुना ज्यादा जानकारी दिमाग सेव करके रख सकता है।
2. धरती के अंदर का तापमान सूरज के तापमान के बराबर है।
3. घोड़ा खड़े-खड़े भी सो सकते हैं क्योंकि उनके पैर मजबूत होते हैं।
4. हंसों के शरीर पर 25 हजार से भी ज्यादा पंख होते हैं।
5. एक कॉकरोच सिर कटने के बाद भी कई दिन तक जीवित रह सकता है।
6. एक गिलहरी की उम्र 9 साल होती है।
7. गिलहरी का एक दांत हमेशा बढ़ता रहता है।
8. एक शतुरमुर्ग की आंखें उसके दिमाग से बड़ी होती हैं।
9. चमगादड़ गुफा से निकलकर हमेशा बाईं तरफ मुड़ती है।
10. ऊंट के दूध की दही नहीं बन सकती है।
11. कंगारू उल्टा नहीं चल सकते।
12. चीटियां कभी नहीं सोती हैं।
13. हाथी ही एक ऐसा जानवर है जो कूद नहीं सकता।
14. कुछ कीड़े भोजन ना मिलने पर खुद को ही खा जाते हैं।
15. अगर एक चींटी का आकार एक आदमी के बराबर हो तो वो कार से दुगुनी तेजी से दौड़ेगी।
16. बतख अपने आधे दिमाग को सुला सकती है जबकि आधा दिमाग जगा रहता है।

17. चीनी को जब चोट पर लगाया जाता है तो दर्द तुरंत कम हो जाता है।
18. जरूरत से ज्यादा टेंशन आपके दिमाग को कुछ समय के लिए बन्द कर सकती है।
19. कोई भी इंसान अपने आप को सांस रोक कर नहीं मार सकता।
20. 92% लोग सिर्फ हंस देते हैं जब उन्हें सामने वाले की बात समझ नहीं आती।
21. सुबह एक कप चाय की बजाय एक गिलास ठंडा पानी आपकी नींद जल्दी खोल देता है।
22. जुराब पहन कर सोने वाले लोग रात को बहुत कम जागते हैं या बिल्कुल नहीं जागते।
23. अगर कोई आपकी तरफ घूर रहा हो तो आप को खुद अहसास हो जाता है, चाहे आप नींद में ही क्यों न हों।
24. 85% लोग सोने से पहले वो सब सोचते हैं, जो वो अपनी जिंदगी में करना चाहते हैं।
25. पढ़ना और सपने देखना हमारे दिमाग के अलग अलग भागों की क्रिया है इसीलिए हम सपने में पढ़ नहीं पाते।
26. जीभ हमारे शरीर की सबसे मजबूत मांसपेशी है।
27. छींकते वक्त दिल की धड़कन 1 मिली सेकंड के लिए रुक जाती है।
28. लगातार 11 दिन से अधिक जागना असंभव है।
29. हमारे शरीर में इतना लोहा होता है कि उससे एक इंच लंबी कील बनाई जा सकती है।
30. मनुष्य के दिमाग में 80% पानी होता है।
31. मनुष्य का खून 21 दिन तक स्टोर किया जा सकता है।
32. फिंगर प्रिंट की तरह मनुष्य की जीभ के निशान भी अलग- अलग होते हैं।
33. दांत का ऊपरी जबड़ा हमारे शरीर का सबसे मजबूत भाग होता है।
34. विश्व में सेब की इतनी प्रजातियां हैं कि अगर रोजाना एक सेब खाया जाए तो हर प्रकार का सेब खाने में 20 साल लगेंगे।
35. लाइटर का आविष्कार माचिस से पहले हुआ था।

36. स्त्रियों की कमीज के बटन बाईं तरफ जबकि पुरुषों की कमीज के बटन दाईं तरफ होते हैं।
37. बिल गेट्स 1 सेकंड में करीब 12,000 रुपए कमाते हैं।
38. दुनिया के सबसे अमीर आदमी एक साल में इतना कमा लेते हैं जिससे दुनिया की गरीबी 4 बार खत्म की जा सकती है।
39. नील आर्मस्ट्रांग ने चंद्रमा पर अपना बायां पांव पहले रखा था और उस समय उसका दिल 1 मिनट में 156 बार धड़क रहा था।
40. पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल के कारण पर्वतों का 15,000 मीटर से ऊंचा होना संभव नहीं है।

- संकलन कर्ता
निशी धीवर
एम. ए.(राजनीति विज्ञान)
तृतीय सेमेस्टर

जरा सबसे ये कह दो

मुँह सी के अब न जी पाऊंगी ,
जरा सबसे ये कह दो ॥2॥
अम्मा कहे बिटिया शीश झुकाना -2
अपना मै सिर ऊंचा उठाऊंगी ,
जरा सबसे ये कह दो ।
बाबा कहे बिटिया पढने न जाना-2
अपना मै ज्ञान बढ़ाऊंगी,
जरा सबसे ये कह दो।
भइया कहे बहना चौखट न लॉगो -2
अब न गुलामी सह पाऊंगी,
जरा सबसे ये कह दो ।
मुँह सी के अब न जी पाऊंगी,
जरा सबसे ये कह दो ।
जरा सबसे ये कह दो ।
जरा सबसे ये कह दो ॥

नाम : मंजू।

कक्षा: बी. एस. सी. तृतीय वर्ष

"मानवता"

मानवता के लिए उषा की,
किरण जगाने वाले हम।
मानवता के लिए उषा की,
किरण जगाने वाले हम।
शोषित पीड़ित दलित जनों के,
भाग्य जगाने वाले हम।
मानवता के लिए उषा की,
किरण जगाने वाले हम।।

अन्य किसी के मुंह की रोटी,
हरना अपना काम नहीं।
पर अपने अधिकार गंवा हम,
कर सकते आराम नहीं।
अपने हित औरों के हित का,
मेल मिलाने वाले हम।
मानवता के लिए उषा की किरण जगाने वाले हम।।

रोटी,कपड़ा, धरती, शिक्षा,
आवश्यकता जीवन की।
व्यक्ति और परिवार सुखी हो,
स्वतंत्रता तब ही सच्ची।
धरती का रूप बदलने को,
निज शक्ति जगाने वाले हम।
मानवता के लिए उषा की किरण जगाने वाले हम।।

शोषित पीड़ित दलित जनों के,
भाग्य जगाने वाले हम।
मानवता के लिए उषा की किरण जगाने वाले हम।।

निशी धीवर
एम. ए. चतुर्थ सेमेस्टर
(राजनीति विज्ञान)

ओ कोरोना तू कहाँ से आया

ओ कोरोना तू कहाँ से आया।
सब कुछ हो गया पराया।
तेरा आना किसी को ना भाया।
मम्मी बोले हाथ धोए।
घर से बाहर कही ना जाए।
सखा सहेली सब भूल जाए।
स्कूल की टीचर की याद सताए।
नानी का घर हमें बुलाए।
शोपिंग के लिए मन ललचाए।
बर्थडे फीका फीका पड़ जाए।
कैसे अपना दिल बहलाए।
तेरा भय इतना सताए।
कोरोना तुझ से नही डरते हम।
हम में है तुझ से लड़ने का दम।
सोशल डिस्टेंस निभाएंगे।
गुड सिटिजन बनकर दीखार्येंगे।
सरकार के रूल्स अपनाएंगे।
घर मे बैठकर तुझे हराएंगे
और अपना जीवन खुशहाल बनायेंगे।
पूर्णिमा कैवट
बी.ए. अंतिम

करुणा

ये ऐसी दुनियाँ है दोस्तों कि यहाँ सब बिकता है
झूठ के आगे यहाँ तो सच भी नहीं टिकता है
बिक जाते हैं लोग बिक जाती है सच्चाई
न लोगों में इंसानियत रहती है, न रहती उनमें अच्छाई
झूठ की बनी इस दुनियाँ में सच की कोई औकात नहीं
लेकिन अगर कहीं झूठ सच को मात दे दे ऐसी तो कोई बात नहीं
झूठ की महल के आगे सच्चाई की झोपड़ी नहीं टिकते हैं
यहाँ लोग तो क्या लोगों के ईमान भी बिकते हैं
ये तो कहने की बात है कि झूठ के पैर नहीं होते
असल में तो सच के भी खैर नहीं होते
क्या कहते हो साहब की झूठ के आगे सच टिक जाए
खरिदने वालों के आगे आप तो क्या आपका ईमान भी बिक जाए
ये ऐसी दुनियाँ है कि यहाँ सब बिकता है
झूठ के आगे यहाँ तो सच भी नहीं टिकता है.....!!

नंदनी बंजारे

कक्षा बी. ए. तृतीय

होली

नन्दन वन में चारों तरफ खुशी का माहौल था परंतु इस खुशी में रानी हिरण कुछ परेशान थी तो कहानी में देखते हैं कि आखिर वह किन कारणों से परेशान थी। और क्या उसकी समस्याओं का हल निकला ।

नन्दन वन में आज चीकू हाथी और मोनू भालू बहुत व्यस्त दिखाई दे रहे थे। अरे भई हो भी क्यों न उनका सबसे पसंदीदा त्योहार होली जो आने वाली थी । उन्हें तैयारियां जो करनी थी ,दोनों ने मिलकर सूची तैयार कर ली ।और चले गए जग्गू बंदर के दुकान रंग लेने दोनों ने सभी के लिए रंग और पिचकारियां खरीदी । और होली आयोजन की रूपरेखा तैयार की ।अपने सभी दोस्तों को संदेश भेजे चीकू हाथी ने अपनी मम्मी को बता दिया कि होली आयोजन में क्या पकवान बनेंगे ।

फिर वे लोग अपनी सबसे अच्छी दोस्त रानी हिरण के घर गए उसे अपनी तैयारी में शामिल करने पर जब वे उसके घर गए तो देखा कि वो बहुत उदास थी।

उन्होंने रानी हिरण से उसकी उदासी का कारण जानना चाहा । तब रानी हिरण ने कहा कि आजकल बाजारों में केमिकल मिले हुए रंग मिलते हैं जिसके कारण पिछले वर्ष मीना लोमड़ी को बहुत दिक्कत हुई थी और बाजार में त्योहार में सभी मिठाइयों में भी बहुत से हलवाई अधिक धनलाभ के लिए बहुत मिलावट करते हैं जिसको खाकर लोग बीमार हो जाते हैं और कई बार तो स्थिति और विकट हो जाती है । और रानी हिरण ने बताया की वो एक और कारण से भी परेशान है । चीकू ने पूछा किस बात से तो रानी ने बताया कि गज्जू सियार हमेशा होली में खुशी बाटने के बजाय दुसरो को परेशान करता रहता है । उसे होली में दुसरो पर पानी से भरे गुब्बारे मारकर उन्हें परेशान करने में मजा आता है सभी उससे और उसकी टोली से परेशान रहते । अब तो चीकू और मोनू का तो एक ही मुहिम था रानी हिरण को खुश करना तो सबसे पहली समस्या थी मिलावटी रंग तो इस बार यह निर्णय लिया गया कि कुकु तितली के पास से फूलों से निर्मित रंग लाया जाएगा ।तो यह समस्या दूर हुई। दूसरी समस्या थी मिलावटी मिठाइयों की और यह एक गंभीर समस्या थी क्योंकि यह लालची लोगों का एक गिरोह था जिसे कानून के हवाले करवाना जरूरी था ।तो सभी ने मिलकर गिरोह जो कि त्योहारों में इस तरह की बेईमानी करते थे उन्हें रंगों हाथों पकड़ने की योजना बनाई चीकू हाथी और रानी हिरण पहुंच गए उस गोदाम में जहां पर नकली मिठाइयां बनाई जाती थी और उसका वीडियो बना लिया तथा पुलिस को जाकर दे दिया इस तरह से नकली मिठाइयां बनाने वाले गिरोह पकड़े गए बनाने वाले गिरोह पकड़े गए और उनकी दूसरी समस्या भी समाप्त हो गई।

लेकिन गज्जू सियार की शैतानियां से जो लोग परेशान होते थे वह समस्या तो अभी बाकी थी वे लोग यह सोच रहे होते हैं कि गज्जू सियार रोता- रोता उनके पास आता है उसकी आंखों में बहुत जलन हो रही होती है रानी हिरण ने पूछा कि तुम्हारा यह हाल कैसे हुआ तो उसने बताया कि अभी वह घर का सामान लेने बाहर जा रहा था कि कुछ लोगों ने उस पर पानी से भरे हुए गुब्बारे मार दिए जो कि उसके आंखों में पहुंच गया और उसकी आंखों में जलन होने लगी चीकू हाथी ने कहा कि आज जब तुम्हारी आंखों में जलन हो रही है तो तुम्हें रोना आ रहा है और जो तुम लोगों को इतना परेशान करते थे उसका क्या, क्या तुमने कभी उनके बारे में सोचा सियार को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने कहा कि होली का त्यौहार तो खुशियों का त्योहार है इसे मिलजुल कर प्यार के साथ मनाना चाहिए हुड़दंग बाजी किसी को परेशान करना इससे खुशी नहीं मिलती खुशी तो सबको प्यार बांटने और मिलजुलकर त्यौहार मनाने से मिलती है होली का त्यौहार तो यह संदेश देता है कि हमें अपनी मेहनत के रंगों से जीवन की रंगोली सजाने चाहिए।
अगले दिन सभी ने मिलकर हंसी खुशी के साथ नंदनवन में होली का त्यौहार मनाया और अपनेपन और भाईचारे का संदेश दिया।

नाम -शालू अग्रवाल

कक्षा- बी.एस सी.(बायो) तृतीय वर्ष

मैं बनगे कलेक्टर

बेटा लोगो से कहता है -

कहत हव सुनावत हव , मोर जुबानी।

सुन ले काका सुन ले काकी , अउ तहू सुन ले छुटकी मामी।

दाई मोर कहे हे, मोर बेटा कलेक्टर बनही।

काबर, मैं राजा बेटा बड़े बलिदानी।।

बेटा मेहनत करते हुए सोने के बाद अपनी मां को याद कर सपने में कहता है-

कैसे बनहु मैं कलेक्टर दाई, तोर सुरता ह अब्बड़ आथे।

मन मोर खोजे दिन -रात , न भूख लगे न प्यास।

घर होंगे मोर सुना दाई, तोर सुरता ह पड़थे बड़भारी।।

माँ भगवान से प्रार्थना कर बेटा के सपने में आकर कहती है-

जल्दी आ जाहु मोर राजा बेटा, तै चिंता झन करबे।

कर मेहनत कर लगन से बेटा , कलेक्टर तै बनबे ।

भूख -प्यास अमीरी -गरीबी सबो ल मिटाबे।

कर मेहनत कर लगन से बेटा, अंजोर तै लाबे।

बेटा पुनः मेहनत करना शुरू करता है और कुछ दिन बीतने के पश्चात माँ से गुस्से के साथ कहता है-

अब्बड़ मेहनत करथव दाई, तोर सुरता ह तभो ल आये।

सबो के भूख मिटाए के खातिर, मोला बार-बार तै समझाये।

जल्दी आ जाहु बेटा कइके, तभो ल न तै आये।

नींद-चैन मोर छुटगे दाई, दुनिया वाला मोला सताये।

दुनियावाला स्वार्थी होंगे , मोर बर काँटा तको बिछाये।

पल-पल मोला ताना मारे, अकेला आनाथ मोला सुनाये।

सुख-शांति समाज के खातिर, फिर भी मोला मेहनत करवाए।

जल्दी आ जाहु बेटा कइके, तहु न एको बार आये।

तोर सुरता ह अब्बड़ सताये, हां तोर सुरता ह अब्बड़ सताये।

अंत मे माँ भगवान से प्रार्थना कर बेटा के सपने में पुनः आती है और दोनों एक -दूसरे से वार्तालाप करते हैं-

मेहनत करके दिन-रात बेटा, तै बनगे कलेक्टर।

तानाशाही सहके लाला, मोर सपना करे साकार।

अब जावत हव तोला छोड़ के बेटा, धरती मईया करे पुकार।
जल्दी आ जाहू लौट के बेटा , मिले मोला दूसरा जनम के उपहार।
कर मेहनत कर लगन से मईया, मैं बनगे कलेक्टर।
जावाथच मोला छोड़ के मईया, मैं बनगे कलेक्टर।
तोर जियत कुछ कर न सके, मैं बनगे कलेक्टर।
होवत मोला अफसोस माता, मैं बनगे कलेक्टर।
जल्दी आ जाबे लौट के मईया, मैं बनगे कलेक्टर,हां हां मैं बनगे कलेक्टर।।

जलबहार रत्नाकर
बी.एस. सी - तृतीय वर्ष।

ज़िन्दगी

"ज़िन्दगी ने पूछा, मुझसे"
उस वक़्त ज़िन्दगी का ख़याल था,
कुछ बारे में मेरे।
एक बार की बात है, ये
कहीं पे बैठी थी, मैं।
कुछ कर रही थी, मैं।
कुछ सोच रही थीं, मैं।
तब कुछ सवाल लिए,
हल्की-सी, प्यारी-सी, धीमी-सी आवाज़ में,
ज़िन्दगी ने पूछा, मुझसे।
ये, शान्ति तू इतनी अच्छी क्यों है,
तब सुन के सवाल ज़िन्दगी की,
मैंने भी जवाब दिया,
कुछ उसी के अंदाज़ में,
मुस्कुराते हुए,
हल्की-सी, प्यारी-सी, धीमी-सी आवाज़ में कि,
"शायर नहीं हम पर,
शायरी कर लेते हैं।
कविताकर नहीं हम पर,
कविताये लिख लेते हैं।
फ़रिश्ते नहीं हम पर,
फरियादें रब से कर लेते हैं।
हम तो बस इंसान हैं,
जो इन्सानियत निभा लेते हैं।"
'इन्सानियत ही है ये,
जो हर इंसान के पास होता तो है पर,
जो खुद के अन्दर,
इंसानियत को बसा लेता है,
वो औरों से खास हो जाता है।'
तब ज़िन्दगी ने मुस्कुरा कर कहा, मुझसे
मिल गया, जवाब मुझको तेरा कि,
इंसान तो सब हैं यहा पर,

जिसके अन्दर हो इन्सानियत,
होता है, वो अच्छा'
इंसान की असली अच्छाई और सच्चाई,
उसके अन्दर के इंसानियत से होती हैं।
शान्ति कुमारी

रहस्य आखिरकार क्या है ...? यह रहस्य

रहस्यमयी दुनियां जहां देखो रहस्य ही रहस्य दिखता है। कभी - कभी मुझे लगता है कि इस रहस्यमयी दुनियां के रहस्यमयी लोगों को हम समझ ही नहीं पाते ज्यादातर लोग यह नहीं समझते हैं कि हर विचार की एक रहस्य होती है , हम विचारों को अपने दिमाग में छिपा सकते हैं । जो रहस्य से कम नहीं है ।

हमारे मन में हमेशा नये - नये विचार उत्पन्न होते रहते हैं, जब किसी व्यक्ति के मन में कोई विचार आता है या उसके पास सोचने का नज़रिया होता है तो वह उसी नज़रिया से देखना पसंद करता है।

बहुत गौर से देखने पर हम पाएंगे कि यह रहस्य यानी हमारे दिमाग और इरादे की शक्ति हमारे चारो तरफ़ दिखाई देता है। सभी के पास कोई न कोई रहस्य होता ही है हमें तो बस अपनी आंखे खोलकर देखना भर है।

हम जिसके बारे में सोचते हैं उसे हकीकत में बदल देते हैं ।

" यह तो मेरी कल्पना है और ये आपको सही लगता है या नहीं मुझे नहीं पता "

" मैं बस अपनी दृष्टि कोण से आपसे यह बात कह रही हूं "

मैं यह बात ज्यादा गहरी और समझ से कह रही हूं जो मुझे महसूस होता है !!

अक्सर इस महान् रहस्य को समझने के बाद हम इस बात से घबरा जाते हैं कि हमारे पास कितने सारे नकारात्मक विचार हैं हमें जान लेना चाहिए कि विचारों पर तो किसी का अधिकार नहीं होता है , वह तो कहीं पर कभी भी उत्पन्न हो जाते हैं ।

" सकारात्मक विचार नकारात्मक विचार से बहुत ज्यादा शक्तिशाली और प्रभाव पूर्ण होता है। अगर हम लंबे समय तक नकारात्मक विचार सोचते रहेंगे तो वह हमारे जीवन में प्रकट हो जाएंगे

" इसीलिए मेरा मानना है कि हमें इसी वक्त फैसला करना है कि हम सिर्फ अच्छे विचार ही सोचेंगे "

ये तो हमारे भगवान का शुक्र है कि विचारों के आने और उनके पूरे होने के बीच में फासला होता है, और समय लगता है।

और हमें अपने विचारों के बारे में जानकर बनने के लिए हम यह विश्वास होना चाहिए कि हम अपने

विचारों के मालिक हैं।

" एक रहस्य हमेशा किसी न किसी के चेहरे पर नजर आ ही जाता है, पर ना जाने वो रहस्य समझ क्यों भी आते वह रहस्य क्या है, किस लिए है ये तो बस वही व्यक्ती जनता है।

जिंदगी का सबसे बड़ा रहस्य ये है कि ___

" हम नहीं जानते कि कोन हमारे लिए दुआ कर रहा है, और कोन हमारे साथ खेल रहा है"

ये तो खुली किताब बन कर आई है,

समझ नहीं पाई इसका रहस्य मैं।

" लेकिन एक दिन ऐसा आयेगा कि मुझे भी पता चल जाएगा कि आखिरकार क्या है ये रहस्य " !!!

आरती वर्मा

बी. एस. सी. प्रथम वर्ष (बायो)

कहानी

एक मंदिर बन रहा था। देश भर से आए शिल्पी पत्थरों पर छैनी से काम कर रहे थे। एक पत्थर कारीगरों के मुखिया ने बेकार समझकर फेंक दिया। रास्ते में पड़ा वह पत्थर मजदूर राहगीरों की ठोकरें खाता, इधर-उधर होता व उदास मन से देखता रहता कि और तो संवरकर मूर्ति का रूप लेकर निखर रहे हैं। मैं अभाग्य पैरों के नीचे दबाया जा रहा हूँ।

एक दिन एक राजकलाकार उधर से गुजरा। उसने वह बेकार पड़ा पत्थर उठाया, और छैनी चलानी आरंभ की व देखते-देखते कुछ ही घंटों में एक सुंदर-सी मूर्ति तराशकर खड़ी कर दी। सबने उसकी प्रशंसा की कि वह बड़ा प्रतिभाशाली हैं। एक राह के रोड़े को रूपांतरित कर दिया। कलाकार-बोला मैं तो औरों की तरह ही हूँ। जो पत्थर में से प्रकट किया है, वह था पत्थर के अंदर ही। मैंने तो मात्र पहचाना व उकेरा है।

हम सबके भीतर महानतम, श्रेष्ठतम बनने की संभावनाएं हैं। कभी-कभी जीवन को गढ़ने वाला कोई कलाकार, गुरु, मार्गदर्शक मिल जाता है तो हम क्या से क्या बन जाते हैं। सौभाग्य का यह अवसर सबके लिए समान रूप से हैं।

आरती केवट

B.Sc.II year (Maths)

" How The Moon Become Beautiful "

The moon is very beautiful with his round, bright face which shines with soft and gentle light on all the world.

But once there was a time when he was not so beautiful as he is now six thousand years ago the face of the moon become change in a single night. Before that time his face had been so dark and gloomy that no one liked to look at him and for this reason he was always very sad.

One day he complained to the flowers and to the stars for they were the only things that would ever look in his face. He said, " I don't like to be the moon ", I wish I were a star or flower, If I were a star ever the smallest one, some great general would care for me, but alas ! I'm only the moon and no one likes me. If I could only be a flower and grow in a garden where the beautiful earth women come, they would place me in their hair and praise my fragrance and beauty or if I could even grow in the wilderness where no one could see, the birds were surely come and sing sweet songs for me. But I'm only the moon and no one honors me.

The stars answered and said, "We can not help you. We were born here and we can not leave our place. We never had any one to help us we do our duty, we work all the day and twinkle in the dark night to make the skies more beautiful - but that is all we can do ". They added as they smiled coldly at the sorrowful moon.

The flowers smiled and sweetly said, " We don't know how we can help you , we live always in one place in a garden near the most beautiful Maiden in all the world. As she is kind to everyone in trouble we will tell her about you we love her so much and she loves us. Her name is Tseh- N'io " .

Still the moon was sad so one evening he went to see beautiful Maiden Tseh-N'io , and when he saw her , he loved her at once . He said " Your face is very beautiful , I wish that you would come to me and that my face would be as your face , motions are gentle and full of grace , come with me and we will be as one and perfect. I know that even the worst people in all the world would have only to look at you and they would love you. Tell me, how did you come to be so beautiful ?

" I have always lived with those who were gentle and happy , and believe that is the cause of beauty and goodness , answered Tseh-N'io .

Then the face of the moon become very beautiful now It is happy and bright and gives a soft gentle light to all the world and there those who say that the moon is now like Tseh-N'io who was once the most beautiful of all earth maiden.

Moral - Never be disappointed accept what you are and live happily



Bhevita Pathare
B. Sc. - III

वक्रत का दरिया

वक्रत का दरिया,

एक ऐसा सबक और सिख का जरिया होता हैं।

जो इंसान को ज़िन्दगी में जीना सिखाती हैं-2

मैंने वक्रत से कुछ सीखा हैं,

कि ना.... वक्रत-वक्रत पे वक्रत के जैसे बनना पड़ता हैं,

वक्रत-वक्रत पे इंसानों को समझना और समझाना पड़ता हैं। कभी-कभी ना.....

कुछ हैं मन मे फिर भी....ना खामोसी से सुननाऔर सुनाना पड़ता हैं।

वक्रत का दरिया, दर्द के दरमियां,कुछ ऐसे सबक दे जाते हैं कि ना....उस सबक को ना दो दोहराया जा सकता हैं, और ना ही भुला जा सकता हैं।

तो कुछ सबक और सिख ऐसे होते हैं, ज़िन्दगी में...

जो एक ज़ख्म दे जाते हैं,और उस ज़ख्म को ना तो..

दिल और दिमाग से याद किया जाता हैं और ना ही..

भुलाया जा सकता हैं।

ज़िन्दगी में वक्रत पे मिला हुआ,


सबक और सिख हम में हालात के नामौजूदगी में भी,

मौजूद होता हैं।तो.....

वक्रत का दरिया सबक और सिख का दरिया होता हैं,

जो ज़िन्दगी को जीना सिखाती हैं-2

बहुत,बहुत सुक्रिया आप लोगों का मेरी छोटी-सी

कविता को पढ़ने के लिए 

शान्ति 

किसानों का लोक पर्व 'हरेली'

किसान लोक पर्व हरेली पर खेती किसानी में काम आने वाले उपकरण और बैलों की पूजा करते हैं। इस दौरान सभी घरों में पकवान भी बनते हैं। इस दिन कुल देवता की पूजा करने की परंपरा है।

हरेली पर किसान नागर, गेंती, कुदाली, फावड़ा, समेत कृषि के काम आने वाले सभी तरह के औजारों की साफ-सफाई कर उन्हें एक स्थान पर रखते हैं और इसकी पूजा-अर्चना करते हैं। इस अवसर पर सभी घरों में गुड़ का चीला बनाया जाता है। हरेली के दिन ज्यादातर लोग अपने कुल देवता और ग्राम देवता की पूजा करते हैं। लिहाजा, ग्रामीण क्षेत्रों में सुबह से शाम तक उत्सव जैसी धूम रहती है।

इस दिन बैल, भैंस और गाय को बीमारी से बचाने के लिए बगरंडा और नमक खिलाने की परंपरा है। लिहाजा, गांव में यादव समाज के लोग सुबह से ही सभी घरों में जाकर गाय, बैल और भैंसों को नमक और बगरंडा की पत्ती खिलाते हैं।

लगेगी नारियल की बाजी: हरेली में गांव व शहरों में नारियल फेंक प्रतियोगिता भी होती है। सुबह पूजा-अर्चना के बाद गांव के चौक-चौराहों पर युवाओं की टोली जुटती है और नारियल से प्रतियोगिता होती है। नारियल हारने और जीतने का यह सिलसिला देर रात तक चलता है। इसी तरह नारियल जीत की धूम गांव व शहरों में रहेती है।

तंत्र विद्या की होगी शुरुआत : श्रावण कृष्ण पक्ष की अमावस्या यानी हरेली के दिन से तंत्र विद्या की शिक्षा देने की शुरुआत की जाती है। इसी दिन से प्रदेश में लोकहित की दृष्टि से जिज्ञासु शिष्यों को पीलिया, विष उतारने, नजर से बचाने, महामारी और बाहरी हवा से बचाने समेत कई तरह की समस्याओं से बचाने के लिए मंत्र सिखाया जाता है। तंत्र दीक्षा देने का यह सिलसिला भाद्र शुक्ल पंचमी तक चलता है।

त्योहार का महत्व: हरेली के दिन गांव-गांव में लोहारों की पूछ परख बढ़ जाती है। इस दिन लोहार हर घर के मुख्य द्वार पर नीम की पत्ती लगाकर और चौखट में कील ठोक कर आशीष देते हैं। मान्यता है कि ऐसा करने से उस घर में रहने वालों की अनिष्ट से रक्षा होती है। इसके बदले में किसान उन्हें दान स्वरूप शिक्षा से दाल, चावल, सब्जी और नगद राशि देते हैं।

गेड़ी की रहेगी धूम : हरेली में जहां किसान कृषि उपकरणों की पूजा कर पकवानों का आनंद लेते हैं, वहीं युवा और बच्चे गेड़ी चलने का मजा लेते। लिहाजा, सुबह से ही घरों में गेड़ी बनाने का काम शुरू हो जाता है। ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है, जो इस दिन 20 से 25 फीट ऊंची गेड़ी बनवाते हैं।

बुवाई अब हलगे संगी, धान बड़े के हाबे इंतजार
नांगर कुदारी पूजे बर हबे सब्बो मईनखे तैयार।
गेड़ी धर लईका मन निकलथे गली डहर
देख के मन हा पुलकित होते, फैली हरियाली चारो डहर
गाड़ा गाड़ा बधाई हो संगी छत्तीसगढ़ के पहेली हरेली तिहार।

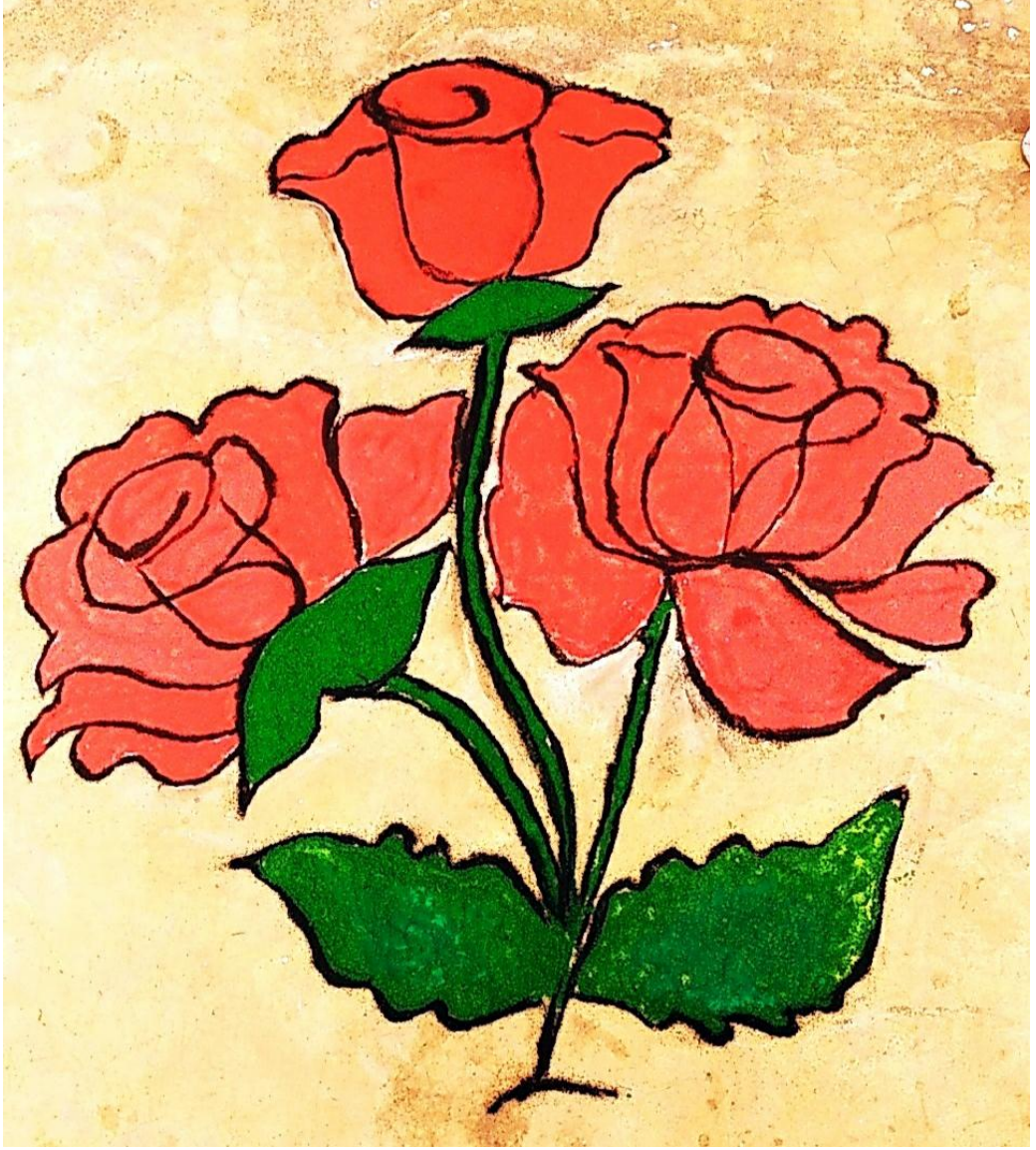
Nirmala Sahu
Class - B.com 3rd year

Art Gallery :



कामिनी कुर्रे

बी.एस.सी तृतीय वर्ष (बायो)



प्रियंका खरे

बी. एस. सी. II



Manisha Khare







Education is the movement
from darkness to light.

NEHA LAHARE

Mehendi Designs



रोहिणी यादव

बी.एस.सी. II



रोहिणी यादव

बी.एस.सी. II



रोहिणी यादव

बी.एस.सी. II



मनीषा खरे

एम. ए. अंग्रेजी । सेम.



मनीषा खरे

एम. ए. अंग्रेजी । सेम.



मनीषा खरे

एम. ए. अंग्रेजी । सेम.



कनुप्रिया बंजारे

बी. एस.सी. तृतीय

Photo Gallery 2020-21

BLOOD DONATION CAMP



INTERNATIONAL WATER DAY



Covid-19 Testing Camp



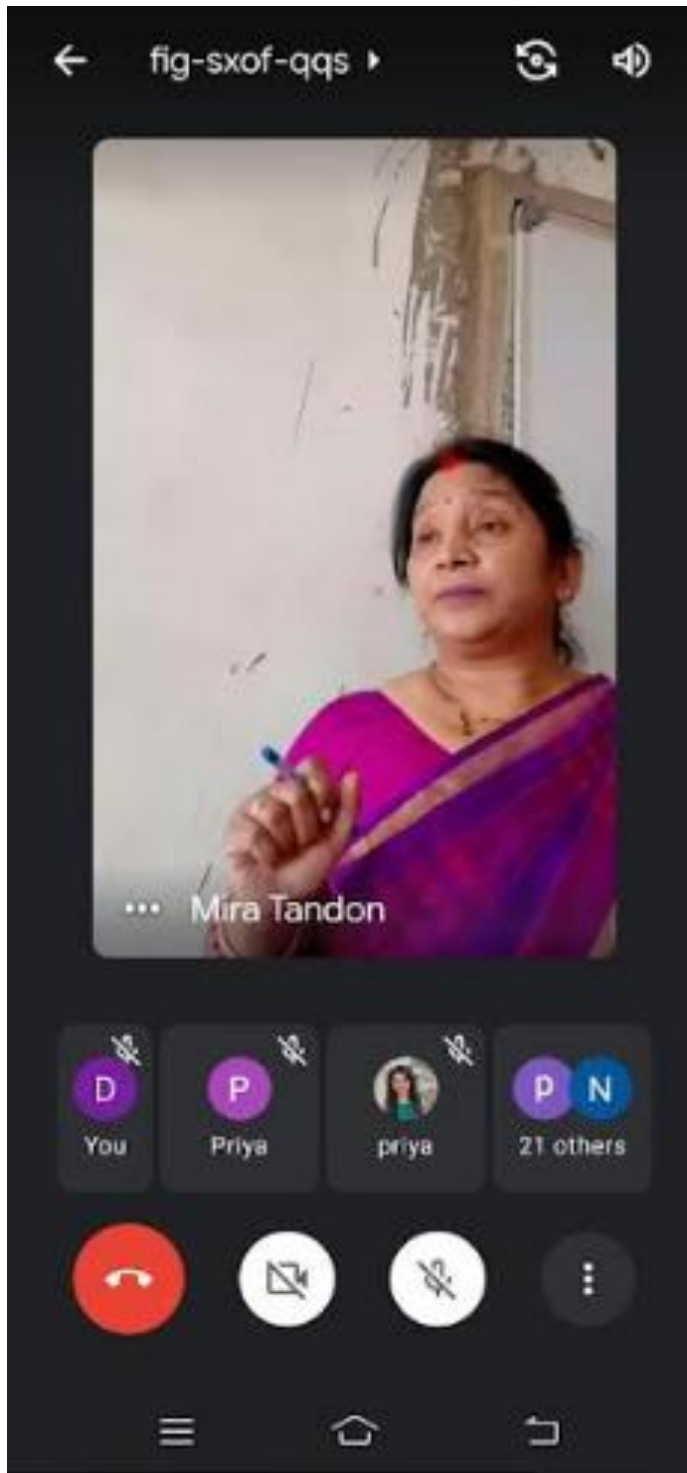
IQAC Meeting in College



Online Induction Program for Fresher Students of UG 1



Online Women Cell Awareness Program



Saraswati Poojan 2021



National Voters' Day Celebration



Mask Distribution by NSS Vounteers



Functions at Shaheed Diwas



Plantation at College Campus

